

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 5

सड़क की बात

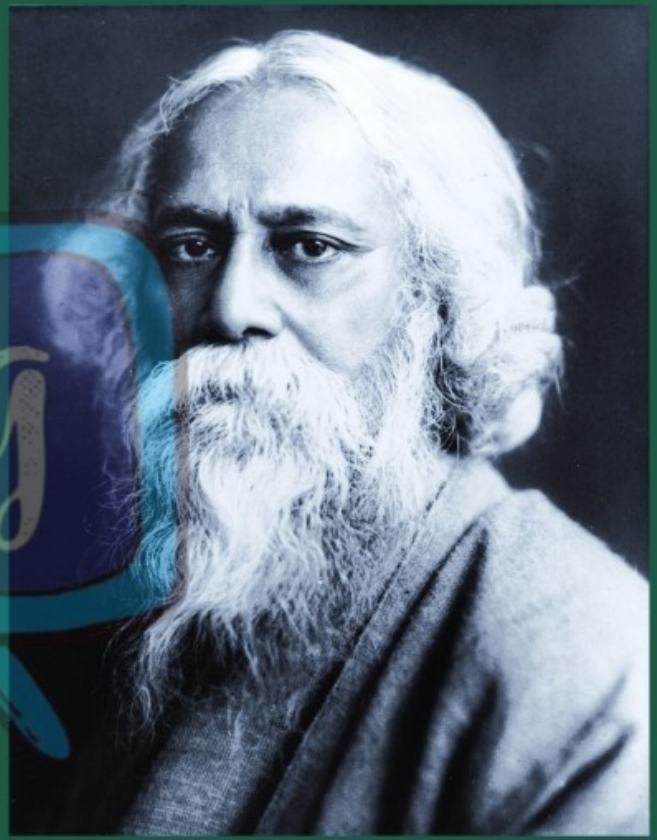
रवींद्रनाथ ठाकुर (1861-1941)

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



रवींद्रनाथ ठाकुर (1861-1941)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca Foundation



कवि परिचय

जन्म :- कवि-गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई, 1861 ई. को कोलकाता के जोरासाँको में एक संपन्न एवं प्रतिष्ठित बांग्ला परिवार में हुआ था।

पिता :- देवेंद्रनाथ ठाकुर

शिक्षाः - रवींद्रनाथ ठाकुर की शिक्षा-दीक्षा मुख्यतः घर पर ही हुई। स्वध्याय के बल पर उन्होंने विविध विषयों का विपुल ज्ञान प्राप्त कर लिया।

रचनाएँ :- काव्य प्रतिभा के धनी रवींद्रनाथ ठाकुर जी ने सात वर्ष की कोमल अवस्था में ही कविता लिखना आरंभ कर दिया था। तब से लेकर देहावसान के समय तक उन्होंने कई अमर लेखनी लिखी। उन्होंने कई हजार कविताओं, गीतों, कहानियों, रूपकों (भावनाट्य) एवं निबंधों की रचना की।

उपन्यासः -'गोरा', 'घरे बाइरे' उल्लेखनीय हैं।

कहानी :- 'काबुलीवाला' एक कालजयी कहानी है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

काव्य ग्रंथ :- 'गीतांजलि', यह उनकी कीर्ति का आधार-स्तंभ है, जिस पर उन्हें सन् 1913 ई. में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

अन्य रचनाएँ :- मानसी, संध्या-संगीत, नैवेद्य, बलाका, क्षणिका आदि ।

संगीत :- रवींद्रनाथ ठाकुर जी द्वारा रचित सैकड़ों गीतों से रवींद्र संगीत' नामक एक निराली संगीत की धारा बह निकली है।

भारत का राष्ट्रीय संगीत 'जन गण मन ...' तथा, पड़ोसी राष्ट्र बांग्लादेश का राष्ट्रीय संगीत आमार सोणार बांग्ला.' उन्हीं की रचना है।

- कवि-गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर ने पश्चिम बंगाल में बोलपुर के निकट 'शांतिनिकेतन'नामक एक शैक्षिक-सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना की थी। आगे चलकर यह विश्व- भारती विश्वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

- शांतिनिकेतन में आने पर ठाकुर जी ने मोहनदास करमचंद गांधी को 'महात्मा' के रूप में संबोधित किया।

मृत्यु :- 7 अगस्त, 1941 ई. को ठाकुर जी का देहावसान हुआ।



सड़क की बात

मैं सड़क हूँ। शायद किसी के शाप से चिरनिद्रित सुदीर्घ अजगर की भाँति वन-जंगल और पहाड़-पहाड़ियों से गुजरती हुई पेड़ों की छाया के नीचे से और दूर तक़ फैले हुए मैदानों में ऊपर से देश-देशांतरों को घेरती हुई बहुत दिनों से बेहोशी की नींद सो रही हूँ।

सुदीर्घ : दीघल बेहोशी : অচেতন অৱস্থা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

जड़ निद्रा में पड़ी-पड़ी मैं अपार धीरज के साथ अपनी धूल में लोटकर शाप की आखिरी घड़ियों का इंतजार कर रही हूँ। हमेशा से जहाँ-तहाँ स्थिर हूँ, अविचल हूँ, हमेशा से एक ही करवट सो रही हूँ, इतना भी सुख नहीं कि अपनी इस कड़ी और सूखी सेज पर एक भी मुलायम हरी घास या दूब डाल सकूँ।

आखिरी घड़ियों : অন্তিম সময় अविचल : অচল
करवट : বাগৰ সলোৱা मुलायम : কোমল
दूब : ঘাঁহ



इतनी भी फुरसत नहीं कि अपने सिरहाने के पास एक छोटा-सा नीले रंग का वनफूल भी खिला सकूँ। मैं बोल नहीं सकती पर अंधे की तरह सब कुछ महसूस कर सकती हूँ। दिन-रात पैरों की ध्वनि, सिर्फ पैरों की आहट सुना करती हूँ।

फुरसत : আজৰি সময়

सिरहाने : মূৰ শিতান

महसूस : অনুভৱ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अपनी इस गहरी जड़ निद्रा में लाखों चरणों के स्पर्श से उनके हृदयों को पढ़ लेती हूँ, मैं समझ जाती हूँ कि कौन घर जा रहा है, कौन परदेश जा रहा है, कौन काम से जा रहा है, कौन आराम करने जा रहा है, कौन उत्सव में जा रहा है और कौन श्मशान को जा रहा है। जिसके पास सुख की घर-गृहस्थी है, स्नेह की छाया है, वह हर कदम पर सुख की तस्वीर खींचता है, आशा के बीज बोता है।

जान पड़ता है, जहाँ-जहाँ उसके पैर पड़ते हैं, वहाँ-वहाँ क्षण भर में मानो एक-एक लता अंकुरित और पुष्पित हो उठेगी। जिसके पास घर नहीं, आश्रय नहीं, उसके पदक्षेप में न आशा है, न अर्थ है, उसके कदमों में न दायाँ है, न बायाँ है, उसके पैर कहते हैं, मैं चलूँ तो क्यों, और ठहरूँ तो किसलिए? उसके कदमों से मेरी सुखी हुई धूल मानो और सूख जाती है। संसार की कोई भी कहानी मैं पूरी नहीं सुन पाती।

आज सैकड़ों-हजारों वर्षों से मैं लाखों-करोड़ों लोगों की कितनी हँसी, कितने गीत, कितनी बातें सुनती आई हूँ। पर थोड़ी-सी बात सुन पाती हूँ। बाकी सुनने के लिए जब कान लगाती हूँ तब देखती हूँ कि वह आदमी ही नहीं रहा । इस तरह न जाने कितने युगों की कितनी टूटी-फूटी बातें और बिखरे हुए गीत मेरी धूल के साथ धूल बन गए हैं और धूल बनकर अब भी उड़ते रहते हैं। वह सुनो गा रही है- कहते-कहते कह नहीं पाई।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

आह, ठहरो, जरा गीत को पूरा कर जाओ, पूरी बात तो सुन लेने दो मुझे, पर कहाँ ठहरी वह ? गाते-गाते न जाने कहाँ चली गई ? आखिर तब मैं सुन ही नहीं पाई । बस आज आधी रात तक उसकी पग-ध्वनि मेरे कानों में गूँजती रहेगी। मन ही मन सोचूँगी कौन थी वह ? कहाँ जा रही थी न जाने ? जो बात न कह पाई उसी को फिर कहने गई। अब की बार जब फिर उससे भेंट होगी, वह जब मुँह उठाकर इसके मुँह की तरफ ताकेगा, तब "कहते-कहते" फिर "कह नहीं पाई" तो ?

समाप्ति और स्थायित्व शायद कहीं होगा, पर मुझे तो नहीं दिखाई देता। एक चरण चिह्न को भी तो मैं ज्यादा देर तक नहीं रख सकती। मेरे ऊपर लगातार चरण-चिह्न पड़ रहे हैं, पर नए पाँव आकर पुराने चिह्नों को पोंछ जाते हैं। जो चला जाता है वह तो पीछे कुछ छोड़ ही नहीं जाता। कदाचित उसके सिर के बोझ से कुछ मिलता भी है तो हजारों चरणों के तले लगातार कुचला जाकर कुछ ही देर में वह धूल में मिल जाता है।

समाप्ति : সমাপ্তি

स्थायित्व : স্থিৰ হোৱাৰ ভাৱ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मैं किसी का भी लक्ष्य नहीं हूँ। सबका उपाय मात्र हैं। मैं किसी का घर नहीं हूँ, पर सबको घर ले जाती हूँ। मुझे दिन-रात यही संताप सताता रहता है कि मुझ पर कोई तबीयत से कदम नहीं रखना चाहता। मुझ पर कोई खड़ा रहना पसंद नहीं करता। जिनका घर बहुत दूर है, वे मुझे ही कोसते हैं और शाप देते रहते हैं। मैं जो उन्हें परम धैर्य के साथ उनके घर के द्वार तक पहुँचा देती हूँ, इसके लिए कृतज्ञता कहाँ पाती हूँ?

संताप : তীব্র বেদনা

कोसते : গালি দিয়া

तबीयत : সুস্থিৰ ভাৱে

वे अपने घर आराम करते हैं, घर पर आनंद मनाते हैं, घर में उनका सुख-सम्मिलन होता है, बिछुड़े हुए सब मिल जाते हैं, और मुझ पर केवल थकावट का भाव दरसाते हैं, केवल अनिच्छाकृत श्रम हुआ समझते हैं, मुझे केवल विच्छेद का कारण मानते हैं।

क्या इसी तरह बार-बार दूर ही से घर के झरोखे में से पंख पसार कर बाहर आती हुई मधुर हास्य-लहरी मेरे पास आते ही शून्य में विलीन हो जाया करेगी?

अनिच्छाकृत : বিনা ইচ্ছাৰে কৰা কোনো কাম

विच्छेद : বেলেগ কৰা বিচ্ছেদ

झरोखे : খিৰিকী

घर के उस आनंद का एक कण भी, एक बूँद भी मैं नहीं पाऊँगी? कभी-कभी वह भी पाती हूँ। छोटे-छोटे बच्चे जो हँसते-हँसते मेरे पास आते हैं और शोरगुल मचाते हुए मेरे पास आकर खेलते हैं, अपने घर का आनंद वे मेरे पास ले आते हैं। उनके पिता का आशीर्वाद और माता का स्नेह घर से बाहर निकल कर, मेरे पास आकर सड़क पर ही मानो अपना घर बना लेता है। मेरी धूल में वे स्नेह दे जाते हैं, प्यार छोड़ जाते हैं।

शोरगुल : हुलस्थूल

मेरी धूल को वे अपने वश में कर लेते हैं और अपने छोटे-छोटे कोमल हाथों से उसकी ढेरी पर हौले-हौले थपकियाँ दे-देकर परम स्नेह से उसे सुलाना चाहते हैं। अपना निर्मल हृदय लेकर बैठे-बैठे वे उसके साथ बातें करते हैं। हाय-हाय, इतना स्नेह, इतना प्यार पाकर भी मेरी यह धूल उसका जवाब तक नहीं देत पाती । मेरे लिए कैसा शाप है यह !

छोटे-छोटे कोमल पाँव जब मेरे ऊपर से चले जाते हैं, तब अपने को मैं बड़ी कठिन अनुभव करती हूँ, मालूम होता है उनके पाँवों में लगती होगी।

निर्मल : पवित्र

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उस समय मुझे कुसुम कली की तरह कोमल होने की साध होती है। अरुण चरण ऐसी कठोर धरती पर क्यों चलते हैं? किंतु, यदि न चलते तो शायद कहीं भी हरी-हरी घास पैदा न होती। प्रतिदिन नियमित रूप से जो मेरे ऊपर चलते हैं, उन्हें मैं अच्छी तरह पहचानती हूँ। पर वे नहीं जानते कि उनके लिए मैं कितनी प्रतीक्षा किया करती हूँ। मैं मन ही मन कल्पना कर लेती हूँ। बहुत दिन हुए, ऐसी ही एक प्रतिमा अपने कोमल चरणों को लेकर दोपहर को बहुत दूर से आती, छोटे-छोटे दो नूपुर रूनझुन करके उसके पाँव में रो-रोकर बजते रहते।

शायद उसके ओठ बोलने के ओठ न थे, शायद उसकी बड़ी-बड़ी आँखें संध्या के आकाश की भाँति म्लान दृष्टि से किसी के मुँह की ओर देखती रहती। ऐसे कितने ही पाँवों के शब्द नीरव हो गए हैं। मैं क्या उनकी याद रख सकती हूँ? सिर्फ उन पाँवों की करुण नूपुर-ध्वनि अब भी कभी-कभी याद आ जाती है। पर मुझे क्या घड़ी भर भी शोक या संताप करने की छुट्टी मिलती है? शोक किस-किसके लिए करें?

म्लान : শেতা

ऐसे कितने ही आते हैं और चले जाते हैं। उफ कैसा कड़ा घाम है! एक बार साँस छोड़ती हूँ और तपी हुई धूल सुनील आकाश को धुआँधार करके उड़ी चली जाती है। अमीर और गरीब, जन्म और मृत्यु सब कुछ मेरे ऊपर एक ही साँस में धूल के स्रोत की तरह उड़ता चला जा रहा है। इसलिए सड़क के न हँसी है, न रोना। मैं अपने ऊपर कुछ भी पड़ा रहने नहीं देती, न हँसी, न रोना, सिर्फ मैं ही अकेली पड़ी हुई हूँ, और पड़ी रहूँगी।

धुआँधार : ধোঁৱাৰে ভৰা

मूल्यांकन



1 | रवींद्रनाथ ठाकुर के गीतों से कौन-सी संगीत की धारा प्रचलित है?

रवींद्र संगीत की धारा

मूल्यांकन



2 किनकी कदम से सड़क के सूखे हुए धूल और सूख जाते हैं ?

गृहहीन व्यक्ति